E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 18-04-2025
Accepted: 25-05-2025

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 3; 2025; Page No. 33-38

मध्य प्रदेश में गोंड जनजाति के लोगों का सांस्कृतिक महत्व और कला

[1]डॉ. प्रतिभा तिवारी, [2]डॉ. अंजली पाण्डेय, [3]प्राजक्ता उदय जोशी, [4]प्रो. आर. सी. मिश्रा

[1]विजिटिंग प्रोफेसर, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[2]पत्राचार लेखक, एसोसिएट प्रोफेसर, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[3]शोधार्थी, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[4]कुलपति, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15808653

Corresponding Author: डॉ. प्रतिभा तिवारी

सारांश

आदिवासी समुदाय किसी भी देश की संस्कृति और उसके मूल्यों का प्रतीक है। गोंड एकमात्र जनजाति है जो मध्य प्रदेश के सभी जिलों में मौजूद है। भारत के सबसे बड़े आदिवासी समुदायों में से एक गोंड जनजाति की आबादी लगभग चार मिलियन है जो पूरे मध्य भारत में फैली हुई है। गोंडों का इतिहास 1400 साल पुराना है। पिछले कुछ दशकों में गोंड चित्रकला ने वैश्विक मान्यता प्राप्त की है। यह मध्य प्रदेश भारत के गोंड जनजाति की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। गोंड कलाकार का काम संस्कृति की लोक कथाओं में निहित है। गोंड कलाकार अपनी कल्पना से जो कुछ भी बनाते हैं उसे चित्रित करने की स्वतंत्रता देते हैं। उनका मानना है कि प्राकृतिक वस्तुओं, पहाड़ों, झीलों और जानवरों में जीवन शक्ति की आत्मा निवास करती है। गोंडों में महत्वपूर्ण हिंदू त्योहारों के दौरान अपने घावों की दीवार और फर्श को चित्रित करने की भी परंपरा है।

मूल शब्दः गोंड, आदिवासी, आजीवन, वैश्विक, शक्ति, परंपरा।

प्रस्तावना

विद्वानों का मानना है कि "गोंड" शब्द "कोंडा" शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है "हरा पहाड़"। गोंड भारत के सबसे बड़े आदिवासी समूहों में से एक हैं जिनकी आबादी लगभग 13 मिलियन है, जो मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, बिहार और ओडिशा राज्यों में रहते हैं। उनकी अधिकांश उपस्थिति मध्य प्रदेश में पाई जा सकती है। गोंड की भाषाएँ मराठी, उड़िया और हिंदी जैसी क्षेत्रीय हैं। उनकी मूल भाषा "गोंडी" है। गोंड की कला पारंपरिक रूप से दीवार चित्रों के रूप में की जाती थी जो लोक और आदिवासी कला से उत्पन्न हुई थी।

लाल, हरे, पीले और नीले जैसे बोल्ड रंगों को लागू करके पेंटिंग में आमतौर पर रेखाओं, बिंदुओं और डैश का उपयोग किया जाता है। प्राकृतिक सामग्री जैसे गोबर, रेत, पौधों, पत्तियों और फूलों से प्राप्त रंगों का उपयोग पारंपरिक रूप से रंग के स्रोतों के रूप में किया जाता रहा है। सोने की कला पारंपरिक रूप से पारंपारिक रूप से की जाती थी। गोंड कला मध्य भारत के गोंड आदिवासी समुदाय की एक प्रसिद्ध कला है जिसमें न केवल चित्रकारी शामिल है बल्कि लोक नृत्य, गीत और प्रदर्शन भी शामिल हैं।

यह गोंड आदिवासी समुदाय की संस्कृति को संरक्षित करने और संप्रेषित करने के लिए पारंपरिक तरीके से किया जाता है। 80 के दशक में शोधकर्ताओं के एक समूह ने स्वदेशी कला की खोज में एक युवा प्रधान गोंड द्वारा बनाई गई एक राहत पाई। जंगढ़ सिंह श्याम (1962-2001)। जंगढ़ ने गाँव के लोगों को पेंटिंग करना सिखाया। इसने गोंड कला को जन्म दिया जैसा कि हम अब जानते हैं और दुनिया भर में गोंड कलाकार के रूप में फल-फूल रहा है। गोंड कला एक पारंपरिक भारतीय आदिवासी कला रूप है, जिसकी उत्पत्ति मध्य भारत में विशेष रूप से मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के क्षेत्रों में हुई है।

गोंड कला जनजाति की सांस्कृतिक विरासत पौराणिक कथाओं और प्रकृति से जुड़ाव को दर्शाती है। परंपरागत रूप से यह कला कागज या कैनवास तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि उनके घरों की मिट्टी की दीवारों पर दीवार भित्ति चित्रों के रूप में बनाई गई थी। इन भित्तिचित्रों में जानवरों, पेड़ों और रोजमर्रा की जिंदगी के दृश्यों को दर्शाया गया है, जिन्हें अक्सर समृद्धि लाने और बुरी आत्माओं को दूर भगाने वाला माना जाता है। आज गोंड कला ने अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त कर ली है, जो अपने जीवंत सौंदर्यशास्त्र और सांस्कृतिक गहराई के लिए प्रसिद्ध है। यह कहानी कहने और पुराने समुदायों की जीवन शैली को दर्शाने के लिए एक माध्यम के

रूप में काम करना जारी रखता है।
कलाकार जटिल आकृतियों और पैटर्न का उपयोग करते हैं जो प्रकृति के विभिन्न घटकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पेंटिंग न केवल प्रकृति पूजा की अभिव्यक्ति हैं, बल्कि सुरक्षा और बुराई को प्रस्तुत करने का एक साधन भी हैं। गोंड कला एक पारंपरिक भारतीय लोक-कला रूप है जिसका अभ्यास गोंड जनजाति द्वारा किया जाता है, जो भारत के सबसे बड़े स्वदेशी समुदायों में से एक है। गोंड कलाकारों की परंपराओं ने अपने आस-पास से प्राप्त प्राकृतिक सामग्री का उपयोग किया जिसमें पौधे आधारित रंग, प्राकृतिक रेशों से बने ब्रश और दीवारें, फर्श और कपड़े जैसी सतहें शामिल हैं।

साहित्य की समीक्षा

गोंड, हर्ष (2022) [1] भारत में कई तरह की लोक कलाएँ हैं और दुनिया भर में सबसे मशहूर कलाओं में से एक गोंड कला है। वे आम तौर पर मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में पाए जाते हैं। गोंड पेंटिंग गोंड जनजाति समुदाय द्वारा बनाई जाती हैं। गोंड कलाकारों का काम लोक कथाओं, संस्कृति से जुड़ा होता है और इस तरह हर पेंटिंग में एक मजबूत कहानी कहने वाला तत्व बनता है। पेंटिंग सिर्फ़ कला का एक टुकड़ा नहीं है, वे बहुत लंबे समय से गोंड कला का अभ्यास करने वाले प्रसिद्ध गोंड कलाकारों द्वारा बनाई गई उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।
डॉ. नीरज गोहिल (2019) [2] जनजातियाँ किसी भी देश की समृद्ध संस्कृति का अभिन्न अंग हैं, इसलिए गोंड दुनिया के सबसे बड़े आदिवासी समूहों में से एक हैं, जो अभी भी भारत के मध्य प्रदेश राज्य के हिस्से में हैं। सांस्कृतिक पर्यटन आगंतुकों के लिए एक स्थायी कड़ी और विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने और उनका अनुभव करने का अवसर है, इसलिए इस केस स्टडी का मूल उद्देश्य आगंतुकों को गोंड जनजाति के सांस्कृतिक इतिहास के संबंध में वर्तमान भारतीय संस्कृति को समझने में मदद करना है और वे पर्यटन क्षमता के साथ कैसे शोकेस हो सकते हैं।
ऐश्वर्या थमन्ना, और डॉ. आर. सुब्रमणि (2023) [3] भारत में लोक कलाओं की एक अलग पहचान है, जो उन्हें अन्य कला रूपों से अलग करती है, और वे सांस्कृतिक पहचान बनाने और उसे संरक्षित करने में एक महत्वपूर्ण सामाजिक मिशन की सेवा करती हैं। भारत के सबसे बड़े आदिवासी समुदायों में से एक गोंड जनजाति मुख्य रूप से मध्य भारत में, विशेष रूप से मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के क्षेत्रों में निवास करती है। पिछले कुछ दशकों में, गोंड चित्रकला ने वैश्विक मान्यता और प्रशंसा प्राप्त की है, जिसका मुख्य श्रेय कलाकार जंगगढ़ सिंह श्याम को जाता है।
एस. अरुर और टी. वायल्ड, (2016) [4] यह शोधपत्र मध्य भारत की गोंड जनजातीय कला के सांस्कृतिक महत्व के बारे में जानकारी प्रदान करने का प्रयास करता है। जबकि सामग्री और विषय-वस्तु का उपयोग समय के साथ बदल गया है, गोंड कला अभी भी पारंपरिक तकनीकों और धार्मिक संदर्भ के साथ अपने संबंध को बनाए रखती है। हालाँकि, कला रूप को दुनिया भर में सीमित प्रदर्शन मिला है, इसलिए इस शोधपत्र का उद्देश्य कलाकारों और कला रूप का अवलोकन प्रदान करना और इस क्षेत्र में आगे के शोध को प्रेरित करना है।
कुमार (2014) [5] बताते हैं कि गोंड चित्रकला लोगों और प्रकृति के बीच अनुष्ठानों, उत्सवों और अंतःक्रियाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाती है। ये पेंटिंग प्रकृति की पूजा में बलिदान देने, सुरक्षा सुनिश्चित करने और बुराई को दूर करने के साधन के रूप में काम करती हैं। गाँव के जीवन को चित्रित करने वाले रूपांकनों का उपयोग और अनुष्ठानों और प्रकृति के साथ मानव आकृतियों का एकीकरण, सभी को विभिन्न जीवंत रंगों में दर्शाया गया है, जो गोंड लोगों की जन्मजात प्रतिभा और रचनात्मकता को प्रदर्शित करता है। प्रत्येक पेंटिंग एक महत्वपूर्ण कहानी कहने वाले तत्व से ओतप्रोत है, क्योंकि एक गोंड कलाकार के दृष्टिकोण से; कहानी कहना उनकी लोककथाओं और संस्कृति का एक अंतर्निहित हिस्सा है।

गोंड कला

पारंपरिक गोंड कला में नृत्य, गीत और चित्रकारी शामिल है। लोकगीतों के माध्यम से कहानियों को मौखिक रूप से प्रसारित किया जाता है। इन्हें किंगरी और बाना जैसे पारंपरिक तार वाले वाद्ययंत्रों के साथ बजाया जा सकता है। धेम्से कहे जाने वाले ये गीत गोंडों के धार्मिक इतिहास, उनके देवताओं और पौराणिक कथाओं को व्यक्त करते हैं। लोकनृत्य के माध्यम से भी कहानियों का संचार किया जाता है। इन्हें जन्म या शादी और अन्य समारोहों और त्यौहारों जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में प्रस्तुत किया जा सकता है। गोंड लोग अपने नृत्य में मोर, मधुमक्खियों और अन्य जानवरों की नकल करते हैं; इसके साथ अक्सर ढोल जैसे वाद्य यंत्र भी बजाये जाते हैं। उनके नृत्य में लय एक महत्वपूर्ण कारक है। गायन अक्सर नृत्य के साथ होता है जहाँ गीतों में अचानक पंक्तियाँ जोड़ी जा सकती हैं। गोंड पेंटिंग पारंपरिक रूप से आवासीय घरों की भीतरी और बाहरी दीवारों पर लगाई जाती हैं। वे स्थानीय वनस्पतियों, जीवों, देवताओं और देवियों को चित्रित कर सकते हैं। पारंपरिक गोंड दीवार चित्रों में जीवंत रंगीन रूपांकनों को बनाने के लिए प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है। गोंड प्रधान रूपांकनों के नाम से जाने जाने वाले ये रूपांकनों में महीन रेखाएँ, बिंदु और डैश होते हैं। उनके चित्रों का मुख्य विषय उनकी रहस्यमय मान्यताओं का चित्रण है। यह उनके द्वारा चित्रित छवियों के उपयोग में परिलक्षित होता है: भगवान और देवी, जैसे गणेश और शक्ति (चित्र 2 देखें); हिंदू अनुष्ठान और प्राचीन हिंदू ग्रंथों से अलौकिक संस्थाओं की कहानियाँ; और आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण पेड़ों या दिव्य प्राणियों - पक्षियों और जानवरों जैसे प्राकृतिक संस्थाओं के प्रति श्रद्धा जो आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। हिंदू विश्वास प्रणाली का केंद्र गाय, इन छवियों में प्रमुख है।

चित्र 1: गणेश (कुसराम, 2015)

गोंड कलाकारों का मानना है कि 'अच्छी छवि देखने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। यह अंतर्निहित विश्वास ही है जो गोंड लोगों को अपने घरों और फर्शों को पारंपरिक रूपांकनों से सजाने के लिए

प्रेरित करता है। परंपरागत रूप से, चित्रों का निर्माण एक हिंदू त्योहार के दौरान होता है। विशिष्ट हिंदू त्यौहारों पर जब पेंटिंग बनाई जाती हैं, उनमें शामिल हैं: करवा चौथ (जहाँ एक पत्नी उपवास करके अपने पति की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करती है); दिवाली (रोशनी का त्योहार जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है); और, नाग पंचमी (फसल की कटाई का उत्सव)। गोंड कलाकार अपने चित्रों में वस्तुओं और लोगों की रूपरेखा के लिए पैटर्न या इन-फिल का उपयोग करते हैं। उपयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के पैटर्न उनकी विशिष्ट शैली स्थापित करते हैं। ये पैटर्न डॉट्स, डैश, लाइनों या मछली के तराजू के रूप में प्रकट होते हैं। इस क्षेत्र में शोध की कमी के कारण, यह स्पष्ट नहीं है कि गोंड लोगों के लिए पैटर्न का क्या अर्थ है। उनकी पेंटिंग्स का उपयोग प्रकृति की पूजा करने और सुरक्षा पाने तथा बुराई से बचने के तरीके के रूप में किया जाता है। मुख्य रूप से, गोंड कला का उपयोग गोंड लोग अपनी कहानियों और विश्वासों को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए करते हैं इन कला रूपों का निर्माण जिस तरह से किया जाता है, वह कलाकारों के इतिहास और अनुभवों को भी दर्शाता है। माना जाता है कि पेंटिंग्स अतीत और वर्तमान, लोगों और उनके आस-पास की प्रकृति, साथ ही आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया को जोड़ने वाले उच्च उद्देश्य की पूर्ति भी करती हैं।

चित्र 2: वैदेही के लिए आग से निशान (श्याम, 2015)

गोंड प्रदर्शनी

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया की आर्ट गैलरी में प्रदर्शनी में 11 गोंड कलाकारों की कृतियाँ प्रदर्शित की गईं। इनमें शामिल हैं: हीरामन उर्वेती, रमेश टेकाम, धवत सिंह उइके, वेंकट रमन सिंह श्याम, भज्जू श्याम, नर्मदा प्रसाद टेकाम, सुभाष व्याम, बालू जीव्या माशे, प्रसाद सिंह कुसराम, राजेंद्र कुमार सिंह श्याम और सुरेश कुमार धुर्वे। उनकी कृतियों में 12 पेंटिंग (वेंकट रमन सिंह श्याम की दो पेंटिंग) और एक लकड़ी की मूर्ति शामिल थी। पेंटिंग में कैनवास पर स्याही या ऐक्रेलिक का उपयोग किया गया है। इन पेंटिंग्स से चार मुख्य विषय उभर कर आते हैं: जीवन का वृक्ष, जीवन देने वाले महुआ वृक्ष का चित्रण, जिसे गोंड लोग बहुत पूजते हैं; स्थानीय देवता, कलाकार के निवास के क्षेत्र के विशिष्ट; हिंदू पौराणिक कथाओं के लोकप्रिय देवता; और, समकालीन जीवन में प्रकृति और प्रौद्योगिकी के साथ मानव जाति का संबंध।

जीवन के वृक्ष के संदर्भ: नर्मदा प्रसाद टेकाम के जीवन के वृक्ष में पक्षियों से भरा एक महुआ का पेड़ दिखाया गया है, जिसके नीचे एक बाघ घूम रहा है (चित्र 3 देखें) । "चित्र में पक्षी पेड़ की जीवनदायी शक्तियों का संकेत देते हैं, जबकि बाघ विषय के आध्यात्मिक महत्व का सुझाव देता है" ।

चित्र 3: जीवन का वृक्ष (टेकाम, 2015)

राजेंद्र कुमार सिंह श्याम की 'जीवन का वृक्ष' गोंड लोगों के जीवन में महुआ के पेड़ के महत्व को उजागर करती है। "गोंड के अनुसार, मनुष्य और पेड़ों का जीवन एक दूसरे से जुड़ा हुआ है और इसे अलग नहीं किया जा सकता"। पेंटिंग में पक्षियों से भरा एक पेड़ दिखाया गया है और गोंड महिलाएं पेड़ से फल इकट्ठा कर रही हैं जबकि पुरुष निगरानी कर रहे हैं (चित्र 4 देखें) ।

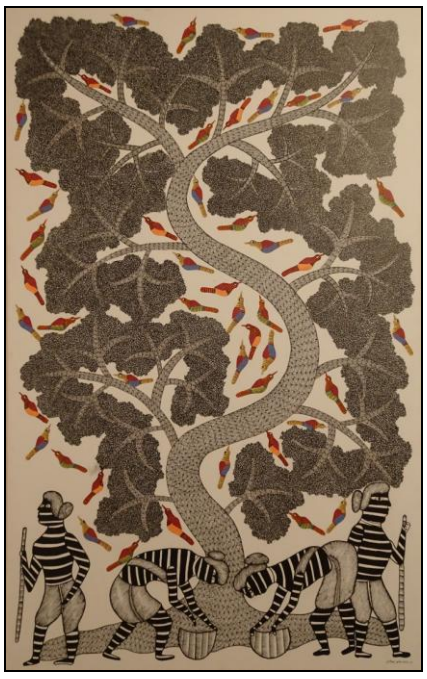

चित्र 4: जीवन का वृक्ष (श्याम, 2015)

सुरेश कुमार धुर्वे ने जीवन के पेड़ को एक मूल भाव के रूप में इस्तेमाल किया है "जिस पर वे अपनी कला में लगातार लौटते हैं और इसे अक्सर योजनाबद्ध तरीके से व्याख्यायित किया जाता है

जैसा कि जीवन की उत्पत्ति में देखा गया है"। जीवन की उत्पत्ति एक पेंटिंग है जो महुआ के पेड़ की जीवन देने वाली प्रकृति को दर्शाती है और कलाकार की इस धारणा को उजागर करती है कि जीवन की उत्पत्ति स्वयं पेड़ से हुई है (चित्र 5 देखें)।

चित्र 5: जीवन की उत्पत्ति (धुर्वे, 2015)

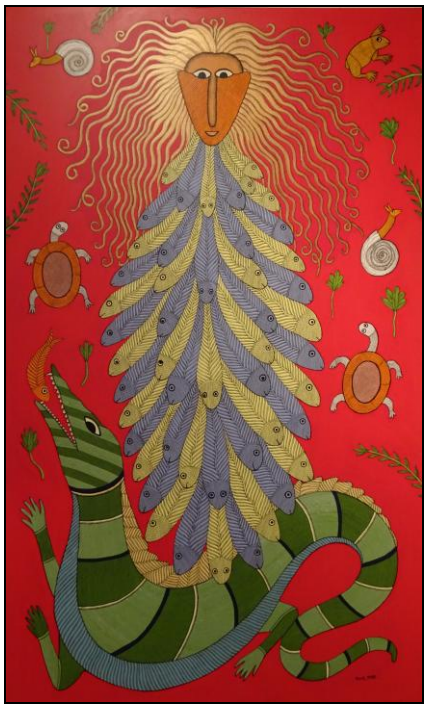

चित्र 6: जलहरीन देवी (श्याम, 2015)

इन तीनों कलाकृतियों के मामले में, यह स्पष्ट है कि जीवन का वृक्ष एक सामान्य मूल भाव है जिसे गोंड लोगों के लिए इसके महत्व को उजागर करने के लिए अलग-अलग तरीकों से दर्शाया गया है। जीवन का यह वृक्ष - जो वस्तुतः महुआ (बेसिया लॉन्गिफोलिया या लैटिफोलिया मधुका इंडिका) से उत्पन्न वृक्ष है - भारतीय कला में व्यापक रूप से पाया जाता है, लेकिन गोंड समुदायों के लिए इसका विशेष महत्व है, जो इसकी उपयोगिता और जीवनदायी गुणों के लिए इसका सम्मान करते हैं। महुआ के फल और फूल विटामिन और खनिजों का एक स्रोत हैं। फलों को कच्चा या पकाकर खाया जा सकता है। फलों और फूलों का गूदा चीनी का एक स्रोत भी है जिसका उपयोग मीठे व्यंजनों में किया जाता है। फूलों की भूसी का उपयोग मादक पेय बनाने के लिए किया जाता है जिसका अक्सर उत्सव के अवसरों पर सेवन किया जाता है। महुआ के बीजों का उपयोग तेल बनाने के लिए किया जाता है जिसका उपयोग खाना पकाने के साथ-साथ दीयों के ईंधन के रूप में भी किया जाता है। फूल के कुछ हिस्सों का उपयोग सब्ज़ियों, जैसे कि बैंगन, को बनाने में किया जाता है ताकि उसका स्वाद बढ़ाया जा सके। गोंड प्रधान (गाँव के बुजुर्ग) पेड़ को छाया के लिए उपयोग करते हैं। वे गाँव के शासन से संबंधित अपने आधिकारिक कार्यों को करने के लिए पेड़ के नीचे बैठते हैं। गाँव की महिलाएँ धार्मिक त्योहारों के दौरान पेड़ के तने पर मंदिर बनाती हैं।

चित्र 7: सरमाया संग्रह से दुर्गा बाई द्वारा 'नाचते हाथी'

चित्र 8: दीवार पर गोंड चित्रकला

भोपाल, मध्य प्रदेश में गोंड कलाकार शंभू दयाल श्याम के साथ गहन साक्षात्कार

यह साक्षात्कार लगभग 30 मिनट तक चला और स्थानीय भाषा, हिंदी में आयोजित किया गया। इसे ऑडियो-रिकॉर्ड किया गया और बाद में ट्रांसक्रिप्ट किया गया। गहन साक्षात्कार के दौरान पूछे गए प्रत्येक प्रश्न गोंड कलाकार के अनुभव, तकनीक, थीम और गोंड चित्रकला में इस्तेमाल की गई अवधारणाओं पर केंद्रित थे।

इसके अतिरिक्त, गहन साक्षात्कार के दौरान, गोंड कलाकार से गोंड चित्रकला के बारे में उनके व्यक्तिगत विचारों के बारे में पूछा गया। मध्य प्रदेश के गोंड कलाकार शंभू दयाल के साथ गहन साक्षात्कार ने गोंड चित्रकला के बारे में उनके दृष्टिकोण और अनुभवों को उजागर किया। "मैंने बचपन में ही अपनी पेंटिंग की यात्रा शुरू कर दी थी, तीसरी या चौथी कक्षा के आसपास।
हालाँकि, यह बचपन का एक दोस्त था जिसने मुझे वास्तव में प्रेरित किया। जब मैं भारत भवन में कलाकृति बना रहा था। संस्था के निदेशक उनकी रचनाओं से बहुत प्रभावित हुए, और इस मुलाकात ने मुझे भी पेंटिंग शुरू करने के लिए प्रेरित किया। अपने शुरुआती दिनों में, मैं अपने परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण दीवारों पर पेंटिंग करता था। मैं पेंसिल नहीं खरीद सकता था, इसलिए मैंने अपनी कलाकृति बनाने के लिए जली हुई लकड़ी के कोयले का इस्तेमाल किया। मैंने मूल रंगद्रव्य प्रदान करने के लिए अमरकंटक से पुराने, त्यागे गए रेडियो सेल और मिट्टी का उपयोग करके अपने खुद के रंग भी बनाए।
आजकल, मैं अपनी पेंटिंग के लिए ऐक्रेलिक रंगों का उपयोग करता हूँ। यह ध्यान देने योग्य है कि मिट्टी से बने रंग असाधारण रूप से टिकाऊ होते हैं, और वे सदियों तक अपनी जीवंतता बनाए रखते हैं। मेरी पेंटिंग के विषय मेरे पूर्वजों द्वारा पीढ़ियों से चली आ रही कहानियों और परंपराओं से प्रेरित हैं। ये कहानियाँ मेरे साथ बनी हुई हैं, और मैंने अपनी कलाकृति के लिए कभी भी बाहरी स्रोतों से थीम की नकल नहीं की है। ये पेंटिंग गोंड जनजाति की संस्कृति और परंपराओं को खूबसूरती से दर्शाती हैं, जिसमें प्रकृति के तत्व जैसे जंगल, नदियाँ, तालाब, साथ ही समुदाय की दैनिक जीवन शैली और आजीविका।"

अन्य स्वदेशी कला रूपों के साथ गोंड चित्रकला का तुलनात्मक विश्लेषण

गोंड पेंटिंग, एक अनूठी और विशिष्ट शैली प्रदान करती है जो उन्हें देश के अन्य स्वदेशी कला रूपों से अलग करती है। जबकि गोंड कला मुख्य रूप से प्रकृति, लोककथाओं और आदिवासी परंपराओं पर केंद्रित है, यह अपने जटिल पैटर्न, जीवंत रंगों के उपयोग और विशिष्ट प्रतीकवाद के लिए अलग है। इसके विपरीत, महाराष्ट्र में वारली जनजाति द्वारा प्रचलित एक अन्य स्वदेशी कला रूप, वारली पेंटिंग, दैनिक जीवन और अनुष्ठानों को दर्शाने के लिए भूरे रंग की पृष्ठभूमि पर मुख्य रूप से सफेद ज्यामितीय आकृतियों के साथ एक न्यूनतम शैली का उपयोग करती है। उदाहरण के लिए, गोंड कला, प्रसिद्ध कलाकार जंगढ़ सिंह श्याम के काम की तरह, जानवरों, पक्षियों और पौराणिक प्राणियों के विस्तृत चित्रण की विशेषता है तुलनात्मक रूप से, गोंड पेंटिंग अपनी कल्पना में अधिक जटिल और उत्साहपूर्ण हैं, जबकि वारली पेंटिंग अपनी सादगी और मोनोक्रोमैटिक टोन के उपयोग के लिए जानी जाती हैं।

1. **शैली और तकनीक:** गोंड पेंटिंग की विशेषता उनके विस्तृत और जटिल पैटर्न हैं। वे अक्सर प्रकृति, वन्य जीवन और आदिवासी लोककथाओं को दर्शाने के लिए महीन रेखाओं, बिंदुओं और जीवंत रंगों की विशेषता रखते हैं। जटिल पैटर्न और जीवंत रंगों का उपयोग गोंड कला की पहचान है। इसके विपरीत, महाराष्ट्र में वारली जनजाति द्वारा प्रचलित वारली पेंटिंग, भूरे रंग की पृष्ठभूमि के खिलाफ मुख्य रूप से सफेद ज्यामितीय आकृतियों के साथ एक न्यूनतम शैली का उपयोग करती हैं। वे सादगी पर जोर देते हुए वृत्त, त्रिकोण और वर्ग जैसी अल्पविकसित आकृतियों का उपयोग करते हैं।
2. **थीम और विषय वस्तु:** गोंड कला मुख्य रूप से प्रकृति, जानवरों, पक्षियों और पौराणिक प्राणियों पर केंद्रित है। यह अक्सर गोंड जनजाति और उनके प्राकृतिक परिवेश के बीच मजबूत संबंध को दर्शाता है, जो उनके सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व पर जोर देता है। दूसरी ओर, वारली पेंटिंग, वारली समुदाय के भीतर दैनिक जीवन, अनुष्ठानों और सामाजिक घटनाओं के चित्रण पर केंद्रित है। वे प्रायः लयबद्ध नृत्य, कृषि गतिविधियों और समारोहों में संलग्न मानव आकृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
3. **सांस्कृतिक महत्वः** गोंड चित्रकला गोंड आदिवासी संस्कृति और परंपराओं में गहराई से निहित हैं। उनकी मान्यताएं। ये पेंटिंग गोंड समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वारली पेंटिंग भी वारली जनजाति के लिए अत्यधिक सांस्कृतिक महत्व रखती हैं, जो उनके रीति-रिवाजों, मूल्यों और जीवन शैली को व्यक्त करने के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं। वे मौखिक इतिहास का एक रूप हैं जो पीढ़ियों से चला आ रहा है।
4. **भौगोलिक वितरणः** गोंड कला मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा के कुछ हिस्सों में पाई जाती है। इसने न केवल भारत में बल्कि वैश्विक कला परिदृश्य में भी मान्यता प्राप्त की है। वारली कला मुख्य रूप से महाराष्ट्र के आदिवासी गांवों में पाई जाती है, खासकर ठाणे जिले में। इसने अपनी विशिष्ट शैली के लिए भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता हासिल की है।

गोंड चित्रकला का आधुनिक दृष्टिकोण

गोंड कलाकार पहले ही देशी रंगों से हटकर बाजार में आसानी से उपलब्ध कला सामग्री की ओर रुख कर चुके हैं। यह खोज दिवंगत कलाकार जे. स्वामीनाथन ने 1980 के दशक में भोपाल में भारत भवन के विकास और स्थापना के दौरान की थी। इस घटना ने 'जंगढ़ कलम' की शुरुआत की, जो चित्रकला का एक बिल्कुल नया रूप है जो गोंड आदिवासी संस्कृति में निहित है और समकालीन कलाओं के समानांतर है। भारत और विदेशों में कई सरकारी इमारतों की दीवारों पर बड़े भित्ति चित्र हैं। गोंड चित्रों में साइकिल, हवाई जहाज, मोटरसाइकिल, जीप, बस और बंदूक जैसे नए रूपांकनों की उपस्थिति लोक चित्रकला की आधुनिकता और गतिशील प्रकृति का उदाहरण है।
गोंड पेंटिंग अपनी मूल कैनवास शैली में व्यापक रूप से लोकप्रिय है, लेकिन परिधान, सहायक उपकरण या घरेलू सामान में नहीं। इसलिए, दुनिया अवसरों से भरी हुई है। यह पेंटिंग कपड़ों पर की जा सकती है, चाहे वह हाथ से हो या ब्लॉक प्रिंटिंग, डिजिटल प्रिंटिंग, हीट ट्रांसफर प्रिंटिंग या स्क्रीन प्रिंटिंग का उपयोग करके। पेंटिंग को पुनर्जीवित करने के लिए, सरकार इस क्षेत्र में कारीगरों को प्रशिक्षित कर सकती है। पारंपरिक गोंड पेंटिंग को उनकी सुंदरता बढ़ाने के लिए तकनीकी उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके बदल दिया गया है। यह मौजूदा बाजार में उपभोक्ताओं द्वारा उत्पाद की स्वीकृति में सहायता करेगा और कारीगरों को उनके घरों में ही रोजगार प्रदान करेगा।

निष्कर्ष

मध्य प्रदेश की गोंड कला काफी अनूठी और उल्लेखनीय है, जिसे इस कला और वहां रहने वाले कलाकारों के उत्थान के लिए मदद की आवश्यकता है। इसी तरह के क्षेत्र में पहले भी कुछ काम किए गए हैं, लेकिन उनकी पैसे और आजीविका की समस्याओं को हल

करने के लिए ऐसी स्थायी मदद दी गई है। उनकी समस्याओं को देखते हुए ऐसा लगता है कि गोंड कला और कलाकारों को पर्याप्त व्यापक कवरेज और लोकप्रियता मिलनी चाहिए। इसे हल करने के लिए हम मध्य प्रदेश के गोंड कलाकारों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं और उनके सामने आने वाली समस्याओं को समझने की कोशिश कर रहे हैं ताकि उन्हें अपनी आजीविका बढ़ाने और प्रोत्साहन और मान्यता प्राप्त करने में मदद मिल सके।

संदर्भ

1. गोंड, हर्ष. मध्य प्रदेश, भारत की गोंड कला के पुनरुद्धार के लिए एक अध्ययन. 2022. doi:10.13140/RG.2.2.19235.12328.
2. गोहिल, नीरज. भारत में जनजातीय पर्यटन की संभावना और योजना: मध्य प्रदेश राज्य, भारत की गोंड जनजातियों पर एक केस स्टडी। 2019.
3. थमन्ना, ऐश्वर्या, सुब्रमणि, आर. रोज़मर्रा की ज़िंदगी और दर्शन का स्वदेशी संचार: मध्य प्रदेश में गोंड चित्रकला का विश्लेषण. शोधकोश: जर्नल ऑफ़ विज़ुअल एंड परफ़ॉर्मिंग आर्ट्स. 2023;4(2):572–585. doi:10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.645.
4. अरुर, एस., वायल्ड, टी. गोंड लोगों की मध्य भारत कला की खोज: समकालीन सामग्री और सांस्कृतिक महत्व. 20वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सूचना विज़ुअलाइज़ेशन (IV), लिस्बन, पुर्तगाल; 2016. पृ. 380-383. doi:10.1109/IV.2016.80.
5. कुमार, एस. गोंड कला और पेंटिंग: अतीत, वर्तमान और भविष्य. 2014.
6. बेनेट, जे. बैरी और जूडिथ हेवन के संग्रह से गोंड पेंटिंग. 2015.
7. गोस्वामी, मानस प्रतिम. गोंड चित्रकला: समकालीन परिदृश्य का एक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन रिव्यू. 2018;6(1).
8. गोस्वामी, मानस प्रतिम, यादव, प्रिया. डॉट्स एंड लाइन्स: गोंड चित्रकला में रूपांकनों की संकेतविज्ञान. जर्नल ऑफ मीडिया एंड कम्युनिकेशन. 2020;3(2):35-50.
9. कोरेटी, शैमरॉक. मध्य भारत की गोंड जनजातियों का सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटी. 2016;6(4).
10. रस्तोगी, ट्विंकल, आदि. शिल्प और विरासत का मिश्रण: मध्य प्रदेश (ग्वालियर) की गोंड कला में सास-बहू (सहस्त्रबाहु) मंदिर की देवी-देवताओं की मूर्तियों के नए रूपांकनों की प्रस्तावना. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स. 2022;10(1).
11. सक्सेना, अनुपम. बिंदुओं और रेखाओं का लेखा-जोखा: मध्य प्रदेश की गोंड जनजातीय कला, समकालीन डिजाइन डोमेन में उनकी परंपरा, प्रासंगिकता और स्थिरता. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च. 2018;9(11):61128.
12. थमन्ना, ऐश्वर्या, सुब्रमणि, आर. रोजमर्रा की जिंदगी और दर्शन का स्वदेशी संचार: मध्य प्रदेश में गोंड चित्रकला का विश्लेषण. शोधकोश जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स. 2023;4(2):572-585.
13. अरुर, सिद्धार्थ, वायल्ड, थियोडोर. गोंड लोगों की मध्य भारत कला की खोज: समकालीन सामग्री और सांस्कृतिक महत्व. 20वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सूचना दृश्य (IV); 2016.
14. भारद्वाज, कुमकुम, उकांडे, अनु. गोंड जनजातीय कला में रंग: मध्य प्रदेश की गोंड चित्रकला में रंगों की व्याख्या और आलोचनात्मक मूल्यांकन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च – ग्रंथालय. 2014;2(3SE).
15. बोरा, शोभा, साक्षी. पारंपरिक गोंड पेंटिंग रूपांकनों का उपयोग करके परिधानों की डिजाइनिंग. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ होम साइंस. 2017;3(1):304-309.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.